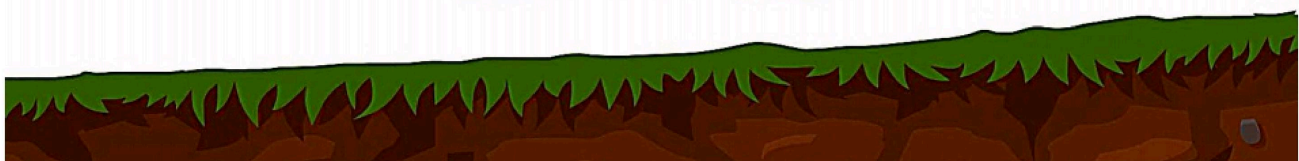


ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान बिसवाँ सीतापुर



-आध्यात्मिक सफ़र--

**"जीव" परिधि में रह रहा, केंद्र को आना लक्ष्य!
यही सफ़र आध्यात्म का, जान इसे प्रत्यक्ष!!**

**चले जहाँ से हो वहीं, यह तो सफ़र ना होय!
जो तुम दूरी तय करो, सफ़र कहावै सोय!!**

**बहुत दिनों से चल रहा, अभी वहीं है जीव!
अज्ञानी इसको कहें, कैसे मिलेगा पीव!!**

**सफ़र शरीर ही कर रहा, सफ़र ना करता जीव!
यह आध्यात्मिक सफ़र नहि, कभी मिले ना पीव!!**

**जीव सफ़र यदि खुद करे, सफ़र ना करे शरीर!
यही सफ़र आध्यात्म का, पहुँचे केंद्र के तीर!!**

तन, मन, सुरत यह तीन पद, यह माया पद जान!

जीव सफ़र इनमें करे, तो जानो अज्ञान!!

जीव मिले परमात्मसे, दोनों हो "एकात्म"!

यही अवस्था पीव है, केवल जानो आत्म!!

तन, मन, सुरत जो न चले, सफ़र करे जो जीव!

यही सफ़र आध्यात्म का, जीव बनेगा पीव!!

तन, मन, सुरत ये तीन पद, यह माया पद जान!

चौथा पद है आत्मा, जीव इसे पहिचान!!

केवल विहंगम चाल से, उड़कर पहुँचे जीव!
होवे सन्मुख केंद्र के, जीव बन गया पीव!!

तन, मन, सुरत ही तीन पद, यह तीनों हैं द्वैत!
चौथा पद है आत्मा, यही ईश, अद्वैत!!

एक है ईश्वर सत् वही, मूर्ति नहीं तस्वीर!
वही अनामी, सतपुरुष, कोई नहीं शरीर!!

एक आत्मा, परमपद, वही है ईश्वर जान!
सन्मुख होकर जानना, सहज, समर्पण ठान!!

अलग शरीर से आत्मा, करता नही स्पर्श!
अंदर बाहर है नहीं, गुरु से करो विमर्श!!

**सभी देवता, जीव सब, लोक प्रकृति सब जान!
संचालित है ब्रम्ह से, दृष्टापुरुष है मान!!**

**ज्ञान, ध्यान से न मिले, क्रिया कर्म भी छोड़!
केवल आत्मबोध से, खुद से खुद को जोड़!!**

**आत्मा और अनात्मा में, भेद जो कोई जाने!
ईश्वर और अनीश्वर को, वह ही केवल जाने!!**

**प्रकाश को आत्मा मानते, यह है थोथा ज्ञान!
सात खण्ड प्रकाश के, यह माया पद जान!!**

**खण्ड - खण्ड में क्यों पड़ा, वह तो पीव अखण्ड!
कोई परिवर्तन नहीं, न कोई ब्रम्हाण्ड!!**

**अनहदनाद ही पुरुष है, यही अनीश्वर होय!
इससे आत्म न मिले, यह माया पद होय!!**

ईश्वर जैसी सत्ता है, ईश्वर नहीं है जान!

इसे अनीश्वर मानते, यह माया पद मान!!

पुरुष और सत्पुरुष में, भेद जो जाने कोय!

वह माया से मुक्त हो, आत्म जाने सोय!!

माया में सब जग फंसा, कोई ना जाने मर्म!

केवल आत्म जानना, सत्य सनातन धर्म!!

हमने क्या सीखा ::--

- 1. "जीव" सफ़र करे!**
- 2. केवल विहंगम चाल से उड़कर केंद्र या आत्मा तक पहुँचे!**
- 3. तन, मन, सुरत इन तीन पदों में यात्रा न करें, यह माया पद हैं!**
- 4. आत्मा न शरीर के अंदर है, न शरीर के बाहर है!**
- 5. आत्मा हमें स्पर्श भी नहीं करती है!**
- 6. हमें केवल आत्मा को ही जानना है!**
- 7. जीव को आत्मा के सन्मुख होना है!**
- 8. सबका मालिक एक वही है!**
- 9. आत्मा और ईश्वर एक ही है!**

10. यह अद्वैत पद है!
11. द्वैत में नहीं फंसना है!
12. द्वैत की तरफ यात्रा नहीं करनी है!
13. केवल अद्वैत को ही जानना है!
14. "प्रकाश" आत्मा नहीं है!
15. अनहदनाद ईश्वर नहीं है!
16. खण्ड- खण्ड में जो हो वह माया है!
17. जिसमें परिवर्तन हो वह माया है!
18. जिसमें गति हो वह माया है!
19. माया से अनन्य होना है!
20. माया से वैराग्य लेना है!
21. आत्मा के सम्मुख होना है!

22. पूर्ण सहज होना है!
23. पूर्ण समर्पित होना है!
24. ज्ञान, ध्यान, क्रिया, कर्म से नहीं पहुँचेंगे!
25. हमें चौथा पद जानना है!
26. चौथा पद ही आत्मा है, यही केंद्र है, यही किलिया, धुरी भी है!
27. तीन पद तन, मन, सुरत जब स्थिर होंगे!
"आत्मघट" प्रकट होगा!
28. जब आत्मघट प्रकट होगा, तब आत्मा की धार
"आत्मघट" पर गिरने लगेगी!
29. "जीव" चुम्बक की तरह खिंचकर केंद्र पर स्वतः
ही पहुँच जायेगा!
30. "जीव" "पीव" बन जायेगा!

- 31. जीव अवस्था से 'मोक्ष' हो जायेगा!
- 32. जीव को मन से मुक्ति मिल जायेगी!
- 33. जीव "आत्मा" द्वारा संचालित हो जायेगा!
- 34. जीव को "आत्मबोध" हो जायेगा!
- 35. जीव का "आध्यात्मिक सफ़र" पूर्ण हो जायेगा!

सुरेशादयाल
ब्रम्हज्ञान योग संस्थान
मोचकला, बिसवां, सीतापुर (उ० प्र०)
सम्पर्क सूत्र- 9984257903